समकालीन कला में कला और कलाकार की स्थिति – एक अध्ययन

Hemlata*

Research Scholar (Drawing & Painting) M. J. P. Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh

सार *– दुनिया भर में कला एवं साहित्य को एक अलग ही स्थान दिया जाता है। आज पूरी दुनिया कला एवं साहित्य को बढ़ावा देने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। ताकि बड़े पैमाने पर लोग इस क्षेत्र में रूचि लें। भारत में समकालीन कला को बढ़ावा देने का काम भारत सरकार द्वारा गठित 'राष्ट्रीय ललित कला अकादमी' का है। इस अकादमी की स्थापना स्वतंत्र भारत में 5 अगस्त 1954 को भारत सरकार द्वारा की गई। इसे नेशनल अकादमी ऑफ आर्ट्स के नाम से भी जाना जाता है। इसका मकसद मूर्तिकला, चित्रकला, ग्राफकला, गृहनिर्माणकला सम्बंधित कला क्षेत्र में काम करना है। साथ ही यह भारतीय कला के प्रति देश और विदेश में जागरूकता और रूचि बढ़ाने का काम करता है। अगर आप भारत में समकालीन कला की तलाश में हैं तो आपको एक बार अकादमी का दौरा जरुर करना चाहिए। यह भारत में कला केंद्र का केंद्रीय संगठन है। यह अकादमी कला को बढ़ावा देने के लिए प्रकाशनों, कार्यशालाओं तथा शिविरों का आयोजन करती है। यह हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम और हर तीन साल में त्रैवार्षिक कार्यक्रम का आयोजन करती है। हर अकादमी की तरह ललित कला अकादमी की भी एक कौंसिल है। इस कौंसिल में प्रमुख कलाकार, केंद्रीय सरकार और विभिन्न-राज्यों के प्रतिनिधि और कला क्षेत्र के प्रमुख व्यक्ति हैं। इस अकादमी के अलावा देश भर में कुल 12 राज्य अकादमियां है। जो भारत में कला केंद्र को देखती है। अकादमी ने देश भर में कलाकारों को पेंटिंग मृत्तिका शिल्प रेखाचित्र और मूर्तिकला का प्रशिक्षण देने के लिए नई दिल्ली और कलकत्ता में स्थाई स्टूडियो की स्थापना की है। इन केन्द्रों में व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा कार्य की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती है।*

शब्दकुंजीः- *समकालीन कला, कार्यक्रम, कलाकार, प्रशिक्षण*

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

समकालीन कला आज की कला है, जो 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध या 21वीं शताब्दी में निर्मित होती है। समकालीन कलाकार विश्व स्तर पर प्रभावित, सांस्कृतिक रूप से विविध और तकनीकी रूप से दुनिया को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। उनकी कला सामग्री, विधियों, अवधारणाओं और विषयों का एक गतिशील संयोजन है जो उन सीमाओं की चुनौती को जारी रखते हैं जो 20वीं शताब्दी में पहले से ही चल रहे थे। समकालीन कला एक सांस्कृतिक संवाद का हिस्सा है जो व्यक्तिगत और सांस्कृतिक पहचान, परिवार, समुदाय और राष्ट्रीयता जैसे बड़े संदर्भ ढांचे की चिंता करता है।

कलात्मक अभ्यास के अलावा, समकालीन कला में कला आलोचना और सिद्धांत, कला शिक्षा अपने शिक्षण संस्थानों और कला स्कूलों, क्यूरेटरशिप, समकालीन कला प्रकाशनों, मीडिया और मीडिया, सार्वजनिक और निजी संग्रह, दीर्घाओं और मेलों जैसे क्षेत्र शामिल हैं। समकालीन कला बाजार, समकालीन कला उत्पादन उद्योग और कला के समकालीन कार्यों को प्रदर्शित, संरक्षित और प्रलेखित किया जाता है।

कला का अर्थ

"मनुष्य की रचना, जो उसके जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला (तज) कहलाती है।" भारतीय कला 'दर्शन' है। शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि सर्वप्रथम 'कला' शब्द का प्रयोग 'ऋग्वेद' में हुआ है- "यथा कला, यथा शफ, मध, शृण स नियामति।" व कला शब्द का यथार्थवादी प्रयोग 'भरत मुनि' ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में प्रथम शताब्दी में किया- "न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न साविधा- न सा कला।" अर्थात् ऐसा कोई ज्ञान नहीं, जिसमें कोई शिल्प नहीं, कोई विधा नहीं, जो कला न हो। भरत मुनि, ज्ञान, शिल्प और विधा से भी अलग

www.ignited.in

'कला' का क्या अभिप्राय ग्रहण करते थे, यह कहना कठिन है।? अनुमान यही लगता है कि भरत के द्वारा प्रयुक्त 'कला' शब्द यहाँ 'ललित कला' के निकट है और 'शिल्प' शायद उपयोगी कला के लिये। हमारे यहाँ कला उन सारी जानकारियों या क्रियाओं को कहते हैं, जिसमें थोड़ी सी भी चतुराई की आवश्यकता है।

समकालीन कला में कला और कलाकार की स्थिति

कला में समकालीनता के अर्थ को समझने के लिये पहले "समकालीनता" पर विचार करना होगा। इस शब्द का अर्थ है 'एक ही समय में समय के साथ' या 'समय के साथ चलते हुये'। पहले जिस कला संदर्भ के लिये "आधुनिक कला" शब्द का प्रयोग किया जाता था। उसी कला संदर्भ के लिये अब "समकालीन कला" शब्द का प्रयोग होता है। इन दोनों का शाब्दिक रूप से अर्थ अलग है परन्तु पारिभाषिक रूप से अर्थ लगभग समान है। आधुनिक कला आन्दोलन के बाद की सृजनात्मक कला को परिभाषित करने के लिये "आधुनिक कला" शब्द का प्रयोग 5 दशकों तक किया गया। परन्तु इस शब्द से सन्तुष्ट न होकर हर काल की आधुनिकता को समय के साथ देखने का प्रयास जारी हुआ और अब समकालीन कला शब्द का प्रयोग कला के उन्हीं संदर्भों के लिये हो रहा है, किन्तु यह शब्द भी कहीं-2 सार्थक नहीं हो रहा हैं इसलिये अपनी बातों को कहने के लिये कुछ विद्वान "आज की कला" शब्द का व्यवहार करने लगे हैं। समकालीन कला का तात्पर्य उस कला से है जो वर्तमान में एक विशेष आन्दोलन से जुड़ा है और प्राचीन परम्पराओं और रूचिनिरन्तर नये-नये प्रयोग हो रहे हैं। कला अभिव्यक्ति, मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक तथा जटिल होती जा रही है। समकालीन कलाकारों के लिये कोई भी विषय भारतीय समाज की जटिलतायें, कुण्ठायें आदि अछुती नहीं है। अगर संघर्षरत नये कलाकार की कृतियों पर नजर डालें तो ये विंगतियाँ पूरी जटिलता के साथ उनके चित्रों में दिखलाई पड़ती है। समकालीन कलाकार व्यक्ति तथा समाज की भावनाओं को आत्मसात् कर गहन खोज में लगा हुआ है।

विगत कुछ वर्षों से समकालीन कला के अर्थों को समझने का प्रयास जारी है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये समकालीनता का अलग-अलग अर्थ है। कोई अमूर्त कला को समकालीन कला मानता है कोई नवीन प्रयोग को कोई अरूपवाद को। सभी के लिये समकालीन कला के अर्थ भिन्न-भिन्न है किन्तु समकालीन कला का जो सही अर्थ है वह है समय के साथ। कला सदैव ही समकालीन रही है, तथा समय व्यतीत होने के बाद वह प्राचीन हो जाती है। समकालीनता कोई वाद नही है। परन्तु इसमें कलाकार की स्वतन्त्रता अवश्य परिलक्षित होती है। समकालीन कला में अनेक कला आन्दोलन और शैलियाँ का प्रतिनिधित्व करती है। समकालीन कला में विषय और माध्यम की सीमायें टूट चुकी हैं। कलाकार अधिक व्यक्तिगत और स्वतन्त्र हो चुका है। समकालीन कलाकार विज्ञान, तकनीक, कम्प्यूटर, संचार माध्यमों आदि की उपज है। अतः उसकी प्रतिभा और सृजनशीलता उसे नये-नये प्रयोग के लिये प्रेरित करती है। परन्तु इस कला के रसास्वादन के लिये समसामयिक कला का ज्ञान होना अति आवश्यक है। समकालीन कला की विचारधारा के अन्तगत कलाकार की विशुद्धतावादी दृष्टिकोण प्रेरणाभूत है। कलाकार की आत्मिक अनुभूति के अतिरिक्त विशुद्धता का कोई मापदण्ड नहीं होता। समकालीन कला पर विचार करें तो तीन प्रमुख कलाधारायें हैं।

- कलाकार वस्तु के वाह्य रूप के सादृश्य से प्रतीकात्मक दर्शन को अधिक पसन्द करता है।
- अपनी कलाकृति को सामाजिक महत्व की निर्मित मानने के बजाय आन्तरिक आवश्यकता की पूर्ति मानता है।
- कलाकृति का मूल्यांकन या रसग्रहण करते समय उसके सौन्दर्यात्मक गुणों का विचार करता है। अगर समकालीन कला के प्रवाहों पर विचार करें तो तीन प्रभावों में विभाजित कर सकते हैं।
- कला-प्रवाह में कलाकृति के वस्तु निरपेक्ष रूप
- कलाकार की आत्मिक अभिव्यक्ति
- कलाकार की कल्पना विलासता

कलाकार वस्तु के आन्तरिक गुण का ही प्रत्यक्षीकरण करता है, बाह्य रूप का नहीं इस दृष्टि से कलाकार की तुलना रहस्यानुभवी से की जा सकती है। सृजन आत्मा और विषयवस्तु के काल्पनिक संयोग का परिणाम है। विषय वस्तु के सार तत्व की अभिव्यक्ति तभी सम्भव है जब कलाकार उसके साथ पूरी तरह तदात्म्य स्थापित कर लेता है। आन्तरिक सत्य को पूरी तरह से आत्मसात् कर लेता है। समकालीन कलाकारों ने इसी आन्तरिक रहस्य और चेतना शक्ति को पहचानने और उसे अपने निजी प्रयोगों में अभिव्यक्त करने की कोशिश की है, समकालीन कलाकारों ने आन्तरिक चक्षुओं द्वारा वस्तु के स्वभाव को आत्मसात् करते हुये स्वयं को स्वतन्त्र कर लिया। अब वह प्रकृति की नकल नहीं करता और न ही उसे वस्तु के साम्य से कोई लगाव रहता है। प्रकृति कलाकार के अनुभव की वस्तु बन

www.ignited.in

जाती है, वस्तु के मूल तत्वों द्वारा आकार का सृजन ही समकालीन कला की मूल रचना पद्धति है। जिसके द्वारा वह वस्तु का चित्रात्मक प्रत्यक्षीकरण करता है। वह न केवल विषय वस्तु के चाक्षुष स्वभाव को निश्चित करता है बल्कि रंग, रूप, धरातल और उभार आदि सभी चाक्षुष गुणों को निर्दिष्ट करते हुये नई दिशा, नये भाव और नये विचार प्रदान करता है। इसी सन्दर्भ में प्रसिद्ध चित्रकार ‘‘पाल क्ले‘‘ ने विचार और भाव को प्रधानता देते हुये कहा है कि - ‘‘प्रत्यक्ष अभिप्राय से उत्पन्न रूपाकारों की समस्त चेतना शक्ति, ब्रश द्वारा ही अभिव्यक्त होती है। ब्रश के प्रत्येक आघात में कलाकार का स्पर्श होता है, और हर आघात का अपना निजी स्वभाव होता हैं आघातों का पारस्परिक प्रभाव तथा उनके बीच का अन्तराल जिन तत्वों की सृष्टि करता है उनके घनत्व, शून्यत्व, और गति में सन्तुलन बनाये रखना अति आवश्यक है। समकालीन कलाकार खुद को पहचानने में इतने अधीर हैं कि वह किसी भी वातावरण से समझौता नहीं करना चाहते। यही कारण है कि समकालीन कला के क्षेत्र में असाधारण रूप से विभिन्न वादों और आयामों का प्रादुर्भाव हो चुका है। समकालीन कला में विविधता, आश्चर्यजनक रूप से समृद्ध है। बदलता हुआ प्रबुद्ध समाज बडे मनोयोग से इस व्यक्तिगत भाषा को समझने परखने की चेष्टा कर रहा है। समकालीन रचनाधर्मिता के क्षेत्र में ‘प्रयोग‘ शब्द आधुनिकता का पर्याय बन चुकी है। यह शब्द वैज्ञानिक युग की देन है। मशीनीकरण और तकनीकी प्रगति के साथ यह शब्द खासतौर से जुड़ा हुआ है। कलाकारों ने एक ओर अप्रत्यक्ष रूप से विज्ञान के विभिन्न पक्षों और प्रयोगधार्मिता के प्रति खिंचाव महसूस किया तो दूसरी ओर यान्त्रिक जड़ता के बन्धन से मुक्त होने की चेष्टा कर रहा है। परम्परा की जंजीरों ने जिस प्रकार तत्कालीन कला को जकड़ रखा था उससे मुक्ति पाने की प्रतिक्रिया के लिये अमूर्तन तथा समकालीन विधाओं का जन्म हुआ। कला सदैव अमूर्त होती है। क्योंकि वह कलाकार के भावों की अभिव्यंजना होती है। मानव के प्रथम बार खड़िया गेरू, कोयला हाथ में लेकर गुहा भित्तियों पर अपने मानस में घुमड़ते हुये प्रभावों को रूपादित करने के लिए जब रेखा खीचीं होगी, कला उसी क्षण से अमूर्त है। क्योंकि प्रकृति में रेखा नहीं होती। उसका निर्माण मानव ने किया है। कला कल्पित रूप से अभिव्यंजना है और रेखाओं के द्वारा ही इसका रूपांकन होता है। कला रूपों से सम्प्रेषित होता है।

औधोगिक और वैज्ञानिक सभ्यता के तीव्र विकास ने मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क को बड़ी गहनता से आन्दोलित किया है। व्यक्तिगत मानसिक विधाओं, बिम्बो, नये नये मुहावरों और साहसिक प्रयोगों ने सारे कला क्षितिज को ही बदल डाला है। कला के नये मानदण्ड, नई परिभाषायें, नये स्वर चारों ओर उभर रहे है। चित्र की विषय वस्तु को त्यागकर कलाकार धरातल के विन्यास, लिपि मूलक गुणों के निर्वाह, आकारों के तनाव, रंगों के आकर्षण और विकर्षण तथा बुनावटों की ओर अधिक आकर्षित हो रहे है कला आज देश और काल के आवरण को तोड़कर स्थानीयता से मुक्त होने की चेष्टा कर रही है परम्परा की जंजीरों ने जिस प्रकार तत्कालीन कला को जकड़ रखा था उससे मुक्ति पाने की प्रतिक्रिया के कारण ही अमूर्तन और अन्य समकालीन विधाओं का जन्म हुआ।

आज हम समकालीन कला के उस दौर से गुजर रहे है। जहाँ कला गतिविधियां तेजी से बढ़ रही है। अनेकों नई नई कला दीर्धायें खुली है। नये कलाकारों का भी काम सामने आया है। कलाकृतियों का बाजार में मुल्य भी बड़ा है और कला संग्राहक भी सचेत हो रहे है। प्रदर्शिनियों की संख्या आज जितनी अधिक बड़ी है। उतनी पहले कभी नहीं हुआ करती थी। चित्रों की फ्रेमिंग (मड़वाना) उनकी छोटी सी किताब (कैटलोगिंग), उनके रखरखाव और उनकी तकनीकी दृष्टि से प्रचलन भी बढा है

इसलिये हमें अपने सरोकारों और सन्दर्भो को साफ साफ देख और समझ लेना भी आवश्यक है भारतीय कला जगत में वे ही कलाकार मजबूती से खड़े हो सकते है जो समाज और कला की नई नई चुनौतियों को स्वीकार करने की क्षमता रखते है। साथ ही अपने परम्परागत कला सौन्दर्य और उसके गौरव को भी मजबूती से पकड़ कर रख सकने का भी सामर्थ्य रखते है। हम हमेशा ही पश्चिम की चकाचौंध से हीन भावना से ग्रसित रहे है। और इस स्थिति को बदलने में भी लम्बा समय लगा हैं सबसे पहले रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ही इस भयावह स्थिति को सम्भाला, जब उन्होने अपने जीवन के सन्ध्याकाल में कागज और कलम की भाषा को एक ओर रखकर रंगों और कुची की भाषा को अपनाया और लगभग दो हजार से भी अधिक चित्र और रेखाँकन बना डाले।

आज वर्तमान में देश में समकालीन कला के लिये एक माहौल तैयार हुआ है। आज का युवा कलाकार अपने माहौल, परिवेश और रोजमर्रा के बुनियादी सवालों और सरोकारों से भी अपने को जुड़ा हुआ देख पा रहा है। यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। आज का भारतीय कलाकार इस नये वातावरण को झेलने के लिये ही नहीं उसे आत्मसात करने के लिये भी तैयार हो चुका है उसकी नियति अब एक निर्णायक दौर से गुजर रही है। जहाँ उसे अपने अस्तित्व की पहचान की लालसा है।

समकालीन कला का जन्म वैज्ञानिक अवधारणा से हुआ है। और उसमें प्रयोगवादी दृष्टिकोण है जिसके फलस्वरूप आधुनिक चित्रकला का स्वरूप विभिन्न प्रारूपों में उपस्थित हो सका है किन्तु उसमें प्रयोगवादी प्रक्रिया किसी निश्चित

www.ignited.in

खोज को स्थापित नहीं कर पायी है। जिसके कारण उसका कोई निश्चित स्वरूप अभी प्रकट नहीं हो सका है लेकिन अगर हम भारतीय चित्रकला का स्वरूप दर्शाना चाहे तो हम यही कहेगें कि भारतीय चित्रकला "कुछ कुछ पाश्चात्य और अधिकतम नवीन प्रयोगवादी है।

भारत में पाश्चात्य शैली के आगमन के बाद हम देखते है कि भारत में नवीन प्रयोगवादी दृष्टिकोण से निम्नलिखित शैलीयों का विकास मुख्य रूप से हुआ --

यथार्थवाद शैली

यथार्थवाद से तात्पर्य है दर्पण के तुल्य चित्रण। जैसे वस्तु नेत्रों से देखी जाती है उसका ठीक वैसा ही चित्र निरूपित करना। इस शैली का प्रयोग पश्चिम में अधिक होता था और इस शैली के भारत आगमन के पश्चात भारतीय चित्रकला पर पाश्चात्य कला का प्रभाव सबसे पहले इसी यथार्थवाद कला से प्रारम्भ होता है और आज वास्तविकता यह है कि यथार्थवाद भारतीय चित्रकला का आधार बन गया है और चित्रकला की शिक्षा का आरम्भ इसी शैली से किया जाता है।

अभिव्यंजनात्मक शैली

इस शैली को सरल रूप में नहीं दर्शाया जा सकता। इस शैली के विभिन्न अर्थ लगाये जा सकते है जैसे कि अभिव्यंजना के लिये रंग रेखाओं का मनमाने ढंग से प्रयोग, किसी भी तरीके से या साधन से प्रज्वलित रंगों से, आकृति, विकृतिकरण से, भावनाओं रहस्यों विचारों और अनुभूतियों आदि की अभिव्यक्ति करना अभिव्यंजनात्मक शैली है इस शैली का प्रयोग भारतीय कलाकारों ने कम किया है।

घनवादी शैली

घन का अर्थ होता है छः समान वर्गो वाला कोई ठोस पदार्थ। घनवादी शैली के रूप में एक नवीन शैली का जन्म हुआ। इस शैली में आकृति के सभी अंग प्रत्यग ज्यामितीय आकारों में विभक्त करके चित्रित किये जाते है आज भारत में इस शैली का काफी प्रचार है। चित्रों में परिप्रेक्ष्य के स्थान पर घनत्व को अधिक महत्व दिया जाता है। घनवादी चित्रकारों की आकृतियों में शक्ति, सौन्दर्य और वक्र रेखाओं का विशेष प्रयोग पाया जाता है।

कोलॉज

कोलॉज बनाना दादावादी प्रवृति से आरम्भ हुआ दादावादी प्रवृति में यूरोपीय कलाकारों ने समाज में व्यप्त बुराई को लेकर चित्रण किया। यह चित्रण व्यंग्यात्मक व प्रतीकात्मक था जिससे इस प्रवृति के कलाकार को पागल व सनकी कहा गया। किन्तु भारत में इस प्रवृत्ति को सीधे नहीं अपनाया बल्कि इसी की एक शैली कोलॉज को अपनाया। जिसमें चित्रकार विभिन्न माध्यम और तकनीक को अपनाकर चित्रण करता है। यह माध्यम कुछ भी हो सकते है, जैसे अखवार, कागज के टुकड़े, लकड़ी, सींक माचिस की तीली, धागा, रस्सी, कपड़ा प्लास्टिक, कलपुर्जे या कोई भी बेकार का सामान आदि।

जंगलवादी शैली

इस शैली में भावव्यक्ति के लिये रंगों को अधिक महत्व दिया जाता है। इस शैली में इस प्रकार के चित्र बनते है जिनमें कोई आकृति नहीं होती बल्कि रंगों द्वारा ही अभिव्यक्ति की जाती है। कलाकार आकृतियों को महत्व नहीं देते हैं। इसमें तकनीक प्रमुख हैं भारतीय चित्रकारों का इस शैली का काफी प्रभाव पड़ा।

इतिहास

समकालीन कला आधुनिक कला (प्रारंभिक वीं शताब्दी) के प्रयोगों का आधार है, और विशेष रूप से कला को पारंपरिक और संस्थागत स्थानों से बाहर निकालने की इच्छा है। इस अर्थ में, कला धीरे-धीरे अपनी प्रतिनिधि कार्यक्षमता खो रही है। समकालीन निर्माण संघर्षों में नहाए हुए यथार्थ और सत्ता की बरामदगी के लिए एक आइना बना हुआ है जो तर्कसंगतता पर इन हमलों का कारण बनता है। कला समाज के संकटों को दर्शाती है और मूल्यों की अभिव्यक्ति का स्थान बनी हुई है। कला और इतिहास के बीच संबंधों का न तो गुणात्मक रूप से मूल्यांकन किया जाता है और न ही मात्रात्मक रूप से, लेकिन वे कला के अधिक संस्थागत गर्भाधान के लिए नेतृत्व करते हैंआधुनिक कला में लगाए गए विचारधाराओं के अंत के बावजूद, वर्तमान कलाकार संस्थानों के प्रति अपनी गहरी प्रतिबद्धता व्यक्त करके इस विरासत को अपने दम पर ले रहे हैं। विशेष रूप से, जब उनकी संवेदनशीलता परेशान होती है।

आज, समकालीन कला आधुनिक विचारधाराओं (1960 के दशक में, फिर 1990 से साम्यवाद के पतन के साथ) की गिरावट से गुजर रही है। यह नए व्यवहारों पर आधारित है

www.ignited.in

शैलीगत नवीकरण, कलात्मक मिश्रण, विविध मूल, तकनीकी कला (कंप्यूटर की गणितीय शक्ति तक पहुंच और सॉफ्टवेयर के एर्गोनॉमिक्स), वास्तविकता के दृष्टिकोण का तरीका। प्रौद्योगिकी ने हमेशा कला के लिए उपकरण लाए हैं। आज, कलाकार इसे मीडिया टूल के रूप में उपयोग करता है, और नए लोगों को आमंत्रित करता है। यह ऐतिहासिक संस्कृति पर आधारित है, सूचीबद्ध हैय पढ़ता है, दौरा करता है, समझता है, खोजता है, विशेषज्ञता देता है, विषय पर ध्यान केंद्रित करता है और जो किया गया है उससे आगे निकल जाता है।

प्लास्टिक कला के लिए "ललित कला" से

समकालीन कला आधुनिक कला के प्रयोगों पर आधारित है, और नियमित रूप से मार्सेल ड्यूचैम्प द्वारा खोले गए उल्लंघन का दावा करती है, और अन्य जिन्होंने कला के अभ्यास को प्रतिनिधित्व की शास्त्रीय बाधाओं से मुक्त किया था।

पोस्टमॉडर्निस्ट विचार ने समकालीन कला में निहित अधिकांश समस्याओं को तैयार किया है, जो वैचारिक धाराओं (साम्यवाद और पूंजीवाद) से मुक्त हुए हैं, हालांकि, प्रतिबद्ध कलाकारों को राजनीतिक या वैचारिक गालियों की आलोचना करने से रोकते हैं।

फ्रांस में, प्लास्टिक कला के संकायों का निर्माण ललित कलाओं के अकादमिक शिक्षण से लड़ने के लिए एक आधार बनाता हैय कला शिक्षा, समाजशास्त्र, नृविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र और अन्य के क्षेत्र के लिए पूर्व में विदेशी विषय, अपने हाल के विकास के साथ धुन में कलात्मक अनुसंधान का मार्गदर्शन करते हैं।

सौंदर्य के लिए औपचारिक खोज के बाद नए सौंदर्य अनुसंधान पथ हैं, जिनमें से सबसे अधिक कट्टरपंथी, वैचारिक कला, अतिसूक्ष्मवाद, प्रदर्शन, शरीर कला, कला के अर्थ और धारणा को स्थायी रूप से संशोधित करते हैं, जो कभी-कभी निर्विवाद रूप से पहली भ्रामक दृष्टि में बदल जाता है।

माध्यम के प्रकारों का टूटना (पेंटिंग अक्सर प्रतिष्ठानों, प्रदर्शन या अन्य के पक्ष में छोड़ दिया जाता है) और कार्यों की सामग्री गहराई से कला मध्यस्थता के नेटवर्क को संशोधित करती हैय नई दीर्घाओं के अलावा, नई प्रदर्शनी संदर्भ और नए प्रसार मीडिया की उपस्थिति हैं।

पेरिस में, सैलून कम्पैराइन्स, पेरिस के शहर में आधुनिक कला के संग्रहालय में, 1954 में, इन रुझानों के सभी प्रदर्शकों के लिए बैठक बिंदु, एक ही स्थान पर, पेंटिंग के आलंकारिक और सार चित्रकारों के साथ सामना किया गया था।

शोध के उद्देश्य

समकालीन भारत की कला व कलाकारों की चर्चा समय समय पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों में होती रही है और उन पर शोधकार्य भी हुए हैं परन्तु यहाँ की कला व कलाकारों को मान्यता दिलाने में भारत के कई प्रमुख कला संगठनों का योगदान रहा है उन पर व्यापक शोध कार्य नहीं हो सका हैं। जिससे इन कला संगठनों का संघर्षमय व स्वर्णिम इतिहास व उनके द्वारा भारतीय कला को आगे बढ़ने में दिये गये योगदान का कलाकारों व कलाप्रियजन को उचित ज्ञान नहीं है। वर्तमान में समकालीन कला का जो अध्ययन किया जा रहा है उसका प्रमुख आधार कला और कलाकारों का अध्ययन है न कि कला संगठनों का परन्तु हमारी दृष्टि में कला संगठनों के गम्भीर अध्ययन के बिना समकालीन भारत की कला का अध्ययन अधूरा रहता हैं। अतः इस क्षेत्र में व्यापक शोध की अत्यन्त आवश्यकता है।

साहित्य की समीक्षा

भारतीय कलाकार अवनीन्द्रनाथ ठाकूर ने ईरानी, चीनी, जापानी, मुगल, राजपूत तथा अजन्ता की शैलियों के समन्वय से एक नई कला शैली का निर्माण किया, जिसे 'बंगाल शैली' कहा गया। कलकत्ता कला विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर रहते हुए अवनीन्द्रनाथ ठाकूर ने पाठ्यक्रम में चीन तथा जापान की कला पद्धतियों के अध्ययन का भी समावेश किया। भारतीय परम्परागत चित्रण की शिक्षा देने के लिए पटना से चित्रकार 'ईश्वरी प्रसाद तथा जयपूर से भित्ति-चित्रकारों को आमंत्रित किया गया। उनके द्वारा बनाई इस बंगाल शैली को पुनरुत्थान कला अथवा पुनर्जागरण कला भी कहा जाता है।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के अतिरिक्त पुनर्जागरण कला के प्रमुख चित्रकार, गगनेन्द्रनाथ ठाकुर, नन्द लाल बसु, असीत कुमार हल्दार, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, देवीप्रसाद राय चैधरी, जामिनी राय, अब्दुर्रहमान चुगतई, ईश्वर प्रसाद, शैलेन्द्रनाथ डे और शारदा उकील आदि थे। पुनर्जागरण आन्दोलन के बाद कला विद्यालयों ने अपनी नीतियां निर्धारित करनी शुरू कर दी और कला विद्यार्थियों को कला से जुड़े विभिन्न माध्यमों की शिक्षा दी जाने लगी। विद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रम को तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित किया। साथ ही विदेशी शैलियों का त्याग कर भारतीय शैली को अध्ययन में शामिल किया। अवनीन्द्रनाथ एवं उनके शिष्यों के द्वारा आधुनिक भारतीय कला का पुनरुत्थान, भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण कदम था।

www.ignited.in

भारत का पिकासो श्री वैभव एस आधाव के युवा चेहरे में आया है। वैभव एस आधाव भारतीय आधुनिक कलाकार हैं। और उन्होंने एक नया कला रूप बनाया है जिसका नाम इंडो-यूरो आधुनिक कला है। यह दुनिया में अद्वितीय कला है। वह इस पर आधारित है इंडिया। उन्होंने आधुनिक, समकालीन, भारतीय, यूरोपीय, वारली, लैंडस्केप इत्यादि में कला विकसित की है। अब वह भारतीय कला का भविष्य वैश्विक मंच है।औपनिवेशिक युग के दौरान, पश्चिमी प्रभावों ने भारतीय कला पर प्रभाव डालना शुरू कर दिया था। कुछ कलाकारों ने एक ऐसी शैली विकसित की जिसने भारतीय विषयों को चित्रित करने के लिए रचना, परिप्रेक्ष्य और यथार्थवाद के पश्चिमी विचारों का उपयोग किया, राजा रवि वर्मा उनके बीच प्रमुख थे। बंगाल स्कूल एक अवंत गार्डे और राष्ट्रवादी आंदोलन के रूप में उभरा, जो पहले प्रचारित शैक्षिक कला शैलियों के खिलाफ प्रतिक्रिया कर रहा था इंडिया, वर्मा और ब्रिटिश कला स्कूलों जैसे भारतीय कलाकारों द्वारा।

नन्द लाल बसु भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण कलाकार हुए, जो कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विश्वविद्यालय शान्ति निकेतन के कला भवन के अध्यक्ष थे। शान्ति निकेतन और कला भवन से नन्द लाल सन् 1920 से ही जुड़े हुए थे। सन् 1922 में वह कला भवन के अध्यक्ष बने। इसी के बाद उन्हें मास्टर मोशाय कहा जाने लगा। शान्ति निकेतन के वातावरण से उनकी कला अत्यधिक प्रभावित थी। वहां के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं लोगों की सरलता से उनका तथा उनकी कला का गहरा संबंध था

कलाकार एन॰ एस॰ बेन्द्रे ने चित्रकला में आधुनिकता की धारा का समावेश करने में एक विशेष योगदान दिया। उन्होंने अपनी कृतियों में भारतीयता को प्रथम स्थान देकर भी विश्वकला की अनेकों प्रयोगवादी शैलियों और तकनीकों के प्रति अपनी सम्बद्धता ओर जागरूकता को दिखाया। एन॰ एस॰ बेन्द्रे नन्द लाल बसु के योग्य शिष्यों में से एक थे। भारतीय चित्रकला के आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र शुरू में बंगाल था, किंतु क्रमशः बम्बई, मद्रास, मछलीपट्टन, आन्ध्र, गुजरात, पंजाब, दिल्ली, जयपूर, हेदराबाद, लखनऊ, आदि कला केन्द्रों की अभिनव चित्र सज्जा ने देश के कला-भण्डार को समृद्ध किया। अब्दुर रहमान चुगताई, देवी प्रसाद राय चोधरी, असीत कुमार हाल्दार, जामिनी राय, शारदा चरण उकील, रविशंकर रावल, ओर अमृता शेरगिल आदि ने नूतन प्रयोगों ओर नाना परीक्षणों द्वारा देशीय प्रभावों को आत्मस्थ कर अपना बना लिया। कला की परंपरा से प्रेरणा लेने के बावजूद भी कलाकारों ने स्वयं को किसी एक युग, या एक कला गुरु या किसी एक सभ्यता तक सीमित नहीं रखा। उस समय की परिस्थितियां कला के स्वरूप को निर्धारित करती थी।

गगनेन्द्र नाथ ठाकुर ने नव युग की कला प्रवृत्तियों को सर्वथा मोलिक ढंग से अपनाया। पश्चिमी भावना ओर पूर्वकी अन्तर्दृष्टि को विकसित कर, स्वतन्त्र पद्धति पर उन्होंने यूरोपीय 'क्यूबिज्म' को भारतीय जामा पहनाकर प्रस्तुत किया। उन्होंने पश्चिमी पद्धति से प्रेरणा अवश्य ग्रहण की थी लेकिन उनकी कृतियों में उनके चिंतन की स्पष्ट झलक है जो उनकी कृतियों में भारतीयता को दर्शाती है। कला में 'आधुनिकता' कलाकार का स्वतन्त्र विचार हे यह कथन रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कला से स्पष्ट हो जाता है। उनकी कला पर यूरोपीय एवं समकालीन भारतीय कलाकारों का प्रभाव नहीं था। रवीन्द्रनाथ टेगोर ने अपने जीवन के सन्ध्याकाल में कागज ओर कलम की भाषा को एक ओर रखकर रंगों ओर कूची की भाषा को अपनाया ओर लगभग दो हजार से भी अधिक चित्र ओर रेखांकन बना डाले। उन्होंने कला सृजन, मोलिक एवं स्वतन्त्र चिन्तन के साथ किया तथा अपने व्यक्तिगत सिद्धान्तों के आधार पर चित्र बनाये

ईश्वर चन्द गुप्ता (2016), "समकालीन कला में लोक तत्त्व" आपके द्वारा लोक कलाएं मानव सभ्यता के विकास का जीता जागता उदाहरण है। इसकी उत्पत्ति धार्मिक भावनाओं अन्ध विश्वासों भय निवारण प्रवृत्ति एवं जातिगत भावनाओं की रक्षा के विचार से हुई है। इसका विकास महत्व मानव जीवन में इसलिए सर्वाधिक है कि यह सामाजिक संदर्भों को जोडती है इसकी अभिव्यक्ति का आधार ही करूणा और स्नेह तथा मंगल भाव होता है। आज भारतीय संस्कृति में लोककला को विश्व में एक अलग पहचान मिली है। चाहे विहार की मधुवनी लोकचित्र हो या बंगाल की पटुआ कला महाराष्ट्र की बरली कला या राजस्थान की माण्डना कला के विशिष्ठ पहचान हैं आधुनिक भारतीय चित्रकला में लोककलाओं की प्रेरणाओं का शुभारम्भ का श्रेय यामिनी रंजन राय का है ।

गीतिका गर्ग (2016) वर्तमान समय में लोककला प्रतीकों का प्रयोग शीर्षक में भारत में अनेक प्रान्त हैं और इन सभी की अपनी एक कला है। हमारे समाज में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक अनुष्ठान होते रहते हैं। जिसमें लोककला का अपना अलग महत्व है। लोककला जन सामान्य की कला है। इसका निर्माण जन साधारण के ही द्वारा अधिकांशतः उत्सवों, त्यौहारों, शादी विवाह आदि के अवसर पर घर की साज-सज्जा आदि के लिये किया जाता है। लोक कला में प्रायः प्रतीकों का उपयोग होता है जो किन्हीं लोक-कथाओं, देवी-

www.ignited.in

देवताओं, किवदंतियों व मिथकों को दर्शाते हैं। इन प्रतीकों के उपयोग का लक्ष्य उन कथाओं को सरलता से व्यक्त करना है। इन प्रतीकों में अधिकांशतः चक्र, सूर्य, चन्द्रमा, स्वास्तिक, चक्राकार रेखायें, पान, आम, पीपल, सर्प, वृत्त, आयत, त्रिभुज, डमरूनुमा-त्रिभुजाकार, आयताकार, मानवाकृतियाँ आदि देखने को मिलती हैं।

उपसंहार

अध्ययन से निष्कर्ष है। कि चित्रकला में मानव मन की विशेष संवेदी स्थिति पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है।आज जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य दुनिया की हर सूचना रखता है उसी प्रकार कलाकार भी विश्व परिदृश्य से अपनी संवेदना जाग्रत करता है, वैचारिक सामग्री एकत्र कर अपनी चेतना से नये से नये माध्यम में, अपनी स्थानीयता के साथ स्वयं को व्यक्त करने की चेष्टा में रहता है। आज कलाकार के सामने समसामयिकी चित्रित करने के लिए विश्व के सांस्कृतिक अतीत का समृद्ध भण्डार है जिससे समसामयिक चित्रकार भी उन समृद्ध प्रवृत्तियों का धारक हो गया है। हमें यह भी देखना है कि कितने कलाकार समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने हेतु उपचारात्मक कलाकृतियों के सृजन में सलंग्न है, सलंग्न है किन्तु कितने सफल है, क्या वास्तव में उनकी कलाकृतियाँ विशेष संदेश देने, मन में वैचारिक क्रांति पैदा करने व एक विशेष शान्त वातावरण में हमें ले जाने में सफल है। इन सब विषयों पर विशेष शोध आज की आवश्यकता जान पड़ती है। अन्त में कला का उद्देश्य सम्पूर्ण मानव समाज के उत्थान हेतु निर्माण करना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। यह लेख कुछ ऐसे ही प्रश्नों को उजागर करने के साथ ही कुछ हल खोजने का प्रयास मात्र है।

सन्दर्भ सूची

1. त्रिआयामी वर्ष 2010, विश्व भारती कला निकेतन, पृष्ठ 3
2. सौन्दर्य – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पृष्ठ 31
3. समकालीन कला, ललित कला अकादमी नई दिल्ली, पृष्ठ 15
4. समकालीन कला, ललित कला अकादमी नई दिल्ली, पृष्ठ 17
5. कला त्रैमासिक, अप्रैल से जून 2000, राज्य ललित कला अकादमी उ0 प्र0 पृष्ठ 23
6. विजन एण्ड डिजाइन -रोजन फ्राई, पृष्ठ 4
7. कला सिद्धान्त एवं परम्परा - प्रो0 बी0 एल0 सक्सेना, डॉ. श्रीमती सुधा सरन, डॉ.
8. आनन्द लखटकिया, पृष्ठ 159-160
9. डॉ. रीता प्रताप - भारतय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास य रा.हि.ग्रं. अकादमी, जयपुर, 2015.
10. विनोद भारद्वाज - बृहद आधुनिक कला कोश य दिल्ली-2015.
11. कृष्णनारायण कक्कड़ (सं.) - समकालीन कला संदर्भ तथा स्थिति य ललित कला अकादमी, नई दिल्ली-1980.
12. समकालीन कला - ललित कला अकादमी की पत्रिका य 1986/मई-1987, संख्या-7- 8.
13. आर्नल्ड हाउजर (अनुवादक-गोपाल प्रधान) - कला इतिहास का दर्शन ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली-2008.
14. प्रेमचन्द गोस्वामी - आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ रा.हि.ग्रं.अ. जयपुर-1995.
15. नीलिमा वशिष्ठ - राजस्थान की मूर्तिकला परम्परा (रा.हि.ग्र.अ.) जयपुर-2001.
16. रामचन्द्र शुक्ल - कला तथा आधुनिक प्रवृत्तियाँ लखनऊ-1988

Corresponding Author

Hemlata*

Research Scholar (Drawing & Painting) M. J. P. Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh

hema143prince@gmail.com